लिबोई केल के घाट जो, ताके सिरे मिले आए इत।
बुजरक बन मधुबन का, मिल्या जोए किनारे जित।। ८० ।।

लिबोई और केल के घाट के कोने इस बड़े वन को आकर मिलते हैं। यह बड़ा मधुवन जमुनाजी के किनारे तक जाता है।

और फिरवल्या पुखराज को, सो पोहोंच्या जाए लग दूर।
चढ़ पुखराज जब देखिए, आए तले रह्या हजूर।। ८१ ।।

फिर पुखराज पहाड़ को घेरकर दूर-दूर तक जाता है। पुखराज पहाड़ पर चढ़कर जब देखें तो लगता है कि यह पास में ही है।

सुख हक का महामत जानहीं, या जानें मोमिन।
दूजा नहीं कोई अर्स में, बिना बुजरक रूहन।। ८२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज के इन सुखों को एक मैं ही जानती हूं या मोमिन जानते हैं। दूसरा इनसे महान और कोई अर्श में है नहीं।

।। प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। ७२५ ।।

फेर कहूं तले बनकी, जो बन बड़ा विस्तार।
भर चबूतरे आगूं चल्या, जाए पोहोंच्या केलके पार।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि अब उत्तर दिशा में नीचे दस हांस चौड़ा और सत्रह हांस लम्बा ताड़वन आया है जो धाम चबूतरे से आगे केल के घाट तक जाता है।

जो बन आया चेहेबच्चे, सोभा अति रोसन।
छाया करी जल ऊपर, तीनों तरफों बन।। २ ।।

इस ताड़वन के अन्दर खड़ोकली का चहबच्चा एक हांस लम्बा-चौड़ा सुन्दर शोभा देता है। इसके तीन तरफ से ताड़ के वृक्षों ने आकर जल पर छाया की है।

ऊपर झरोखे मोहोल के, जल पर बने जो आए।
इन चेहेबच्चे की सिफत, मुख थें कही न जाए।। ३ ।।

ऊपर रंग महल में यहां झरोखे हैं (जो लाल चबूतरे में नहीं थे)। जो जल पर एक के ऊपर एक आए हैं। इस खड़ोकली की महिमा मुख से वर्णन करने में नहीं आती।

कई बन हैं इत ताड़ के, कई खजूरी नारियर।
और नाम केते लेऊं, बट पीपर सर ऊमर।। ४ ।।

यहां पर कई वृक्ष ताड़ के हैं, कई खजूर के तथा कई नारियल के हैं और भी नाम कहां तक लूं? बट, पीपल और ऊमर (गूलर) के भी वृक्ष हैं।

ए बन गेहेरा दूर लग, इत आए मिल्या केल घाट।
जमुना जल किनार लों, छाया चली दोरीबन्ध ठाट।। ५ ।।

यह ताड़वन दूर तक फैला है और केल घाट के कोने तक जाता है (अर्थात् दस मन्दिर की जगह तक जाता है)। यह केल का घाट इन ताड़वन के वृक्षों से लगता हुआ जमुनाजी के किनारे तक सीधा चला गया है।

Nijanand App

जोए जमुना का जल, पहाड़ से उतरत।
तले आया कुंडमें, पहाड़ से निकसत।। ६ ।।

जमुनाजी का जल पुखराज पहाड़ से उतरता है और मूल कुण्ड से आगे निकलता है।

जमुनाजी के मूलमें, पहाड़ बन्यो चबूतर।
आगूं कुंड दूजा भया, जहां से जल चल्या उतर।। ७ ।।

जमुनाजी के मूल में सुन्दर पहाड़ पर एक चबूतरा बना है। उसके आगे दूसरा निशान बंगलों का है, जहां से जल नीचे उतरता है।

पेहेले कुन्ड चबूतरा, दूजा आगूं सोए।
चारों तरफों बैठक, जल उज्जल खुसबोए।। ८ ।।

उसके आगे अधबीच का कुण्ड तथा उसके आगे ढपो चबूतरा है। इस चबूतरे के ऊपर चारों तरफ सुन्दर बैठक बनी है और नीचे से बहुत सुन्दर जल की खुशबू आती है।

चारों तरफ चबूतरा, जमुना दोऊ किनार।
ए कुंड हुए दोऊ इन विध, चली द्योहरी दोऊ हार।। ९ ।।

इस चबूतरे से जमुनाजी के दोनों किनारे तक मूल कुण्ड है और आगे जमुनाजी के दोनों किनारे पर द्योहरियां आई हैं।

केतेक लग ढांपी चली, तरफ दोऊ थंभ हार।
इन आगूं जुदी जिनस, चली द्योहरी दोऊ किनार।। १० ।।

जमुनाजी कुछ दूर तक (सवा दो लाख कोस तक) ढकी हैं। उनके नीचे जमुनाजी के दोनों किनारों पर थंभों की हार आई है। इसके आगे की शोभा अलग है। आगे अलग-अलग तरह की द्योहरियां दोनों किनारों पर जाती हैं।

ऊपर ढांप्या पुल ज्यों, सोभा लेत सुन्दर।
ऊपर द्योहरी जड़ाव ज्यों, जल खलकत चल्या अंदर।। ११ ।।

जमुनाजी के ऊपर इन थंभों पर जो पटाव आया है उसकी बड़ी सुन्दरता है। वह पुल जैसा है। उसके ऊपर जगमग करती द्योहरी बनी है और जल नीचे खलकता हुआ बहता है।

चार थंभ हारें चली, ऊपर ढांपी तरफ दोए।
यों चल आई दूरलों, ए जल जमुना जोए।। १२ ।।

जमुनाजी के दोनों किनारे पाल पर दो-दो थंभों की हार आई है जिसके ऊपर पड़ाव आया है। इस तरह से जमुनाजी कुछ दूर तक ढकी चली हैं।

दोऊ किनारें बैठक, बन गेहेरा गिरदवाए।
अति सोभा इत जोए की, इन जुबां कही न जाए।। १३ ।।

इस जगह जमुनाजी के दोनों किनारों पर बैठकें बनी हैं और चारों तरफ से वन आया है। इसकी शोभा बेशुमार है। वर्णन करने में नहीं आती।

Nijanand App

दोऊ तरफों द्योहरी, कई कंगूरे कलस ऊपर।
इत बैठक अति सुन्दर, चल आए दोऊ चबूतर।। १४ ।।

द्योहरियों के चारों तरफ जो जमुनाजी के दोनों तरफ आई हैं, कई तरह के कंगूरे और कलश बने है। यहां की बैठक बड़ी सुन्दर है। दोनों चबूतरे जो दोनों किनारे पर जमुनाजी के पटाव के नीचे ही हैं, देखने योग्य हैं।

ए जल तरफ ताल के, इतथें चल्या मरोर।
एक द्योहरी एक चबूतरा, ए सोभा अति जोर।। १५ ।।

यह जमुनाजी का जल हौज कौसर तालाब की तरफ उत्तर से दक्षिण को मुड़कर जाता है। जहां से जमुनाजी मरोड़ खाई हैं। उनके किनारे पर दोनों तरफ पाल के ऊपर एक महल, एक चबूतरा इस प्रकार से आए हैं जिनकी अपार शोभा है (८३ मन्दिर के लम्बे-चौड़े हैं)।

ए बन की सोभा क्यों कहूं, पेड़ चले आए बराबर।
दोऊ तरफों जुगतें, आए द्योहरियां ऊपर।। १६ ।।

यहां महावन और मधुवन के पेड़ों की शोभा कैसें कहूं जिनकी डालें इन महलों और चबूतरों के बराबर आई हैं और द्योहरी पर छाया आई है। यह शोभा जमुनाजी के दोनों किनारों पर आई है।

इत लंबा बन आए मिल्या, जमुना भर किनार।
इतथें छत्री ले चल्या, पोहोंच्या पहाड़ के पार।। १७ ।।

यहां पर जमुनाजी के किनारे तक महावन आकर मिला है। जिसकी छतरियों की शोभा पुखराज पहाड़ के आगे तक गई है।

दोऊ किनार सीधी चली, आए पोहोंच्या केल घाट।
एक चौक द्योहरी इतलों, ए बन्यो जो ऐसो ठाट।। १८ ।।

जमुनाजी केल घाट तक सीधी आती हैं। यहां तक इनके किनारों पर द्योहरी चबूतरे आते हैं। ऐसी सुन्दर शोभा बनी है।

छूटक छूटक द्योहरी, सातों घाटों माहें।
दोऊ किनारें जड़ाव ज्यों, क्यों कहूं सोभा जुबांए।। १९ ।।

सातों घाटों के बीच में भी जहां दो घाट मिलते हैं द्योहरियां आई हैं। जमुनाजी के दोनों किनारे जड़ाव जैसे चमकते हैं। इस जबान से उनका वर्णन कैसे करूं?

इतथें चले तालों, एक द्योहरी एक चबूतर।
दोऊ तरफ या विध, जोए हौज मिली यों कर।। २० ।।

यहां से जमुनाजी ताल तक जाती हैं। उस किनारे पर भी एक के बाद एक द्योहरी, एक चबूतरे की शोभा दोनों तरफ आई हैं और जमुनाजी हौज कौसर तालाब में इस तरह से जाकर मिलती हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, मैं बोलत बुध माफक।
ख्वाब मन जुबानसों, क्यों कर बरनों हक।। २१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं अपनी बुद्धि की शक्ति के प्रमाण से वर्णन करती हूं। मेरी जबान और मन झूठे संसार का है। इससे अखण्ड परमधाम की हकीकत का वर्णन कैसे किया जाए?

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ७४६ ॥

Nijanand App